TECHE UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. P_MSS_4367

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

श्रीज
यतिहु
अणबा
लावोध

॥र्द०॥ ऐँ नमः॥ श्रीमद्वामेयमानम्य रम्यत्वेन नितिस्मरः । सातज्ञातकरं सौम्यं । ज्ञानदर्शनवर्धकम् ॥ १ ॥ व्याख्यां श्रीम
त्कृतीसौसावतश्च मवा । श्री कहता चारित्रलक्ष्मी तइं वर्तइ श्री वामा नाम राणी तेहनो पुत्र । हिवइ शिष्य कहइ छइ । माता नउ नाम कहयउ । अ
नइ पिता नो नाम न कहयउ । तेहनउ उत्तर कहइ छइ । जिण माता गर्भ नव मास अनइ वली दिवस वहुरानि विषइ धर्या । पाली जउवरावी हर्ष सघात इ
मोटा कीधा तिण वाति माता मोटी । लोकनी रीतइ पिण माता इक मोटी । यथा । ता धाना मग्र धरित्री । धीको स्तुति उदारत । तलो ना गौरवी श्रेष्ठ । तनोमि
ज्ञनदी मता ॥ १ ॥ इत्यादि वचनं माता ऊगइ मोटी । अनइ माता नाम ग्रहण थी पिता पिण श्री अश्वसेन राजा लेवो । तेहना पुत्र श्री पार्श्वनाथ तेहनइ
नमस्कार करीनइ कहुं स्नातसंघात मदाइ । पिण ते केहवा छइ । श्रीपार्श्वनाथ भगवंत सुभगपणाइ मनुष्य तेहनो करणहार छइ । वली सौम्यसी लोचइ
सर्व लोक कृपरि । किहनइ दुरवकारी थोनथी । वली केहवा छइ । ज्ञान अनइ दर्शन तिण करी मनोहर छइ । हिवइ सिख्य कहइ लनाक रि । प्रथम ज्ञान कहयो अन
इ पछइ दर्शन कहयो ते केहइ कारण । तिहां विशेषविषय इ छइ । तथा केवलीनइ पाहिलउ ज्ञान अनइ पछइ दर्शन जाणिवउ । ते किम । प्रथम केवल ज्ञा २
ने करी वस्तु नउ ज्ञान हवे । पछइ तेहनो दर्शन थाये । अनइ छद्मस्थ नइ प्रथम दर्शन पछइ ज्ञान । पहिलो घट पट लकुटादिक वस्तु देषि । पूवइ तेहनउ ज्ञा २
न हवे । के आपरिल वस्तु । तिण कारणि इहां श्री पार्श्वनाथ भगवंतनो अधिकार छिन तणी । प्रथम ज्ञान पूठइ दर्शन कहयो । प्रथम श्लोकनो अर्थ जाणि
वउ ॥ १ ॥ हिव श्री अभयदेवसूरि गुरु केहवी कीधी पार्श्वनाथनी स्तवना आगइ वषाणीसइ । तिण श्री अभयदेवसूरि गुरु वइ नमस्कार करतउ इस्य उच्यु २ ते×
तइ ॥ रम्यां पांगनवांगवृत्ति जिनीनाले विसाले स्मिते । यथा नाम मरा सव्याल विलसत्कीर्ति कृतं । वामेयस्तवना विधान निपुणाभ्यां सीर मिश्रकं
णा ॥ श्री सवेन यदेवसूरिगुरुवः जं चैतमे मंगलं ॥ २ ॥ व्याख्या । रम्य कहतां मनोहर छइ जे सनाउपांग पर्वा छे नव अंग तेहनी जे टीका तिन्ह रूप कमलिनी १
तेहनउ जे नाल । पिण केहवउ छइ नाल । विसाल कहतां विस्तीर्ण छइ । वली स्मित कहतां विकस्वर छइ । तेहनइ विषइ । क्रियारत नाम हंसनी बालकतण १
विलसतीली लायते धरेवइ । कृतं कहतां निश्चय थी । हिव केहवा छइ ते गुरु । वामेय कहतां श्री पार्श्वनाथ देवनी के तवना तियइ रे विधान कहतां करि

१/२

२

इउ ते दने विषइ निउणकरतां थवीणी ३ पलक्षण युक्त श्रीपार्श्वनाथनी स्तुति जयतिहुयण बत्रीसी कीधी । वली केहवो छइ गुरु हिरउस २
वोछइ केहवा कुणकरतां श्राद्ध एहवा सदा ईतिके गुरु श्रीअभयदेवसूरि इणि नामइकरी मुजनइ मंगलीक २ हिवतिणि श्रीअभयदेवसूरित
णीकीधी श्रीपार्श्वनाथ भगवंतनी स्तवना जयतिहुयण बत्रीसी वषाणीयइ छइ आपणी मतिनइ अनुसारइ हिवशिष्य पूछइ छइ श्रीअभयदेवसू
रिइं जयतिहुयण बत्रीसी कां कीधी छइ तेकिसे प्रयोजन मूर्ष मनुष्यपिण प्रयोजन विना प्रवर्त्ति नही यथा प्रयोजन विना लोके मंदोपिन वर्त्तते इस
वाक्य लगी प्रयोजन विना दक्ष मनुष्य प्रवर्त्ति नो नही इहांपिण जयतिहुयण बत्रीसी करिवइ किसे तेतिहिवयइ छइ तिहां हवइ संप्रदाय जाणिवं २
पूर्वइंमहामुनीश्वर संवेगी सिरोमणि श्रीअभयदेवसूरि श्रीसंघनइ आग्रइ गुरुनइ आदेसइ व्याख्यानी वृत्ति हो श्रीगार ठाणस्यइ करुणाइ ४ाक्ष
वोइ प्रमुख बीर प्रमुख नवांग कृत्ति बीस सहक करतां सूत्र अक्षुतवस्तु ज्ञातरसपणइ इत्यादि कनवेरसपोष्यातिवारे गुरु रकहिछे परवड
इंगा एक तीजनइ थी विवहन दी तिवारे श्रीअभयदेव सूरइं संवेगपणा माटइ सर्व वस्तुनो पच्चरकाण करी । अन्न थ्या कजीराथा करी आवि
लइ पाणी ३ इम करतां केतलेएक दिने गलितकुष्टीय्याधि रोगऊपनउ अशुभ कर्मइ विहार करतां संजाणइ गामि गुरु रातिदेशमाहि आव्या । तिह
महात्मा थिवसइ करी पीमाणा रह्या अशुभ कर्मइ कर्म आमन गारमणाय्या पीड़ि कर्मणा निमित्त आव्या वली गुरेविशेष इपिण तेमाया सर्व संघ
एक वउथ्या तिवारइ गुरे कर्मुं जे अन्हे [illegible] इसा ति मिच्छादुक्कड जे स्यां सर्व संघ इजाणे पाडे एसा तिचुवदि सिनइ दिन गुरु मिच्छादुक्कड लेसा
इ सर्व संघपिण आ मुलाइ भणउच्छ्रयोत इमौटा संवेगी सद्गुरुजता एहवा मनुष्यनइ धर्मनो प्रबोध देइ धर्म मार्गनइ विषइ दृढकरतां महाक्रिया
पात्र गुरु मिच्छादुक्कड लेस्यइ तेतले तेरसनी अर्द्धरात्रिनै विषइ शासनदेवता श्रीअभयदेवसूरिनइ आवीकहो जे हे प्रभुसूता किं जागो छउ गु
रु कह्यो अम्हे जागां छां वली शासन देताये कह्यो जागो छउ तो कउछउ नव सूत्र रीकोकनीकं जोतिवारे गुरु कह्यो छइमो माहि किसे जेषा
रीश्रक्ति नही तिणकारणि कथेलीमसकइं देवताय कह्यो उंमांमांहि विइत्कक्कनी उघेलवानी शक्ति किमनही अउतीई माघणा काल श्रीमदा २

युग्मं

वीर भगवंतनो तीर्थ प्रवर्त्तसे तेभणी रत्निकरिस्यउ तिवारे कह्यो जउइंस्यां सरीर रमवां गीहन्नि किम करीस्यां एसा ति मिच्छादुक्कडलेत्रान १
इछो छइ देवताय इकहस्यउं श्रमणा नगरतेरनइ पासइ सेढिकानदीनइ पासइ खरवरवउ पलासमछइ तिणइ वृक्षितणइ श्रीपार्श्वनाथ भगवंतनी प्र
अचिंत्य चिंतामणि कल्पवृक्ष समान प्रतिमा छइ तेहनइ आगलि तुम्हे देवचांदीनवी स्तोत्र करिज्यो तेहनइ प्रभावइ तुम्हारइ सरीर भ्रांति ज्यो तत्काल रोग उप
समी जास्यइ समाधि प्राप्स्यइ एहवउं कही सासनदेवता अदृश्य थइ हिवप्रभाति नइ सम सर्व श्रीसंघवांदि तणी आव्यो तिवारइ गुरे कह्यो उ
अम्हे श्रीथंभणउपार्श्वनाथ वांदिस्यां इसो एक मनमांहि सांवकपनउ छइ श्रावके मनमांहि चीतव्यउ आज पछे तिथंभणउ पार्श्वनाथ किहो इन
×मोते× मासस्यउं तिणिकारणि गुरुस्युं कहइ छइ परगुरु महाबु साव छइ जाणीयै छै सही सरात्रि जाणी कइदेवताय इ वचन कह्यो छइ इम मनमां
हे विमासी संघपिण कह्यो अम्हेसाथि अम्हे पिण श्रीथंभणा पार्श्वनाथ वांदिस्यां तिवारे मोली करी गुरु बइसी सर्व श्रीसंघ साथइ च्याल्या
वेहारिक मकरता धवलकइ पुर आगइ जिवारइ आव्या तिवारइ सरीर का इएक स्वस्थ थयउ तिरुजाती चरणे चल्या सेढिकानदीनइ नजीक
जिवारे आव्या तिवारे गुरे श्रावकानइ कह्यउ जिहां सेढिकानदीने तीरि खारवरउ पलासमछइ तिहां एक नित्यप्रति कामधेनु षीरजरे छइ तिणि मे
लवीकणी धरती कुइ छइ सेतेजा ईजोवउ तिवारइ श्रावक जोइवा गया तिहां खरवरइ पलासइ देठइ चीकणी सुमिदीठी तिवार इम्रियाल निइछो
इणि पलासइ इचीकणी धरती किम तिहां गोवालक कह्यउ एक सुरहीनित्यप्रति आवी षीरझरइ छै तिणि भलि इचीकणी सुमि जाणिवी तिवारइ
श्रावके पिण जाणे गुरु संकहीते सुमिप्रह्विड हर्षित मन थके जाई गुरु आगलि कह्यो तिवारे श्रीअभयदेवसूरि गुरु तिहां आव्या दर्शन मात्रै स्तुति ×३×
×य× करिवी मांमी तिहां श्रीजयतिहुयण बत्तीसी कीधी जिवारइ सतरमी काव्य फणिफणफारफुरंत रयण एहवउ कह्यउ तिवारइ श्रीपार्श्वनाथ प्र
तिमा सइ इप्रकल्पदु मावतार प्रगट थया वली तिणि जयति जयण बत्रीसी मांहि गाथा बेअत्यंत मंत्राक्षर गर्भित प्रमीड़ी सासन देवता टिकनस २
के तत्काल आसन प्रकंप थइ आवी जातिणि सो त्रसघाते श्रीपार्श्वनाथ भगवंतनइ स्तव्या श्रीसंघसंघातइ चैत्य वंदना कीधी तिवारे तिहां श्रीसंघे थ

×प्रो×

तेगलो रोगे धरणेंद्र प्रत्यक्ष थई श्री थंभण पार्श्वनाथ प्रासाद करावउ श्री अभयदेवसूरि तणो रोग उपसम्यो स्तंभ उधारी रह्या तिहां श्री अभयदेवसूरि
थई श्री पार्श्वनाथ तणी इति माया यी इति इम सर्व सेवे कीधी ते मोटो तीर्थ थयउ जगत्र माहे प्रसिद्ध थउ दिवराति नइ समे श्री अभयदेवसूरीश्वर
याम हवे ली शासनदेवता आवी इम कह्युं जे ए सुंदेसरी स्वर्गे देज्ञ तिहुयण बत्रीसी कीधी ते गाहा कीधी सांली परे तेहनी गाथा विश्रेनक गुणे
तरी सांतली देवता अवस्य आवे इह तिहां रही नसके इ आगे लेकुली काठयग ठरती आवइ छइ लोकद्विारे जिहां तिहां बहु विधि आसात
ना करी गुणिस्यइ तिवारइ उपद्रव करस्यइ तिणवास्तइ गाथा बे क्ज तमारउ डोपउ जयतिहुयण स्तोत्र नी गाथा ३० गुणिस्यइ तेहनइ पिण तिहां रक्षा
सिवशांति नी रोग मोक्ष साता करिस्या इम स्तोत्र नउ मोटो माहात्म्य छइ सप्रभाविक छइ परण गाथा रसमारउ पदवी कही सासनदेवता प्रजाती
गाथा विज्ञ संभारी छइ तिणि गुणिवानी विधि पणि घणी छे ते कायेपथइ गुणिवी नहीं पद्रहस्य छइ हिव प्रस्तवनस प्रभावीक माहरइ ठो मिश्र थइ रों
तेहनान मस्कार ३० आपणी मति नइ अनुसारइ वषाणीयइ छे हिव बालक जिम बाहु पसारी समुद्र नो मान कहे तिम हुं पिण ए स्तोत्र वषाणुं
लघु था। जय तिहुयण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नंतरि १ जय तिहुयण कल्लाण कोस दुरिय क्करि केसरि २ तिहुयण जण अविलंघिय २
आण भुवणत्तय सामिय ३ कुणसु सुहाइं जिणेस पास थंभणय पुरट्ठिय ४ व्याख्या जयवंतो वर्त्तो किसी पणि इ स्वर्ग मृत्यु पाताल
ए त्रिभुवन त्रिलोक मनोवांछित पूरण वरप्रधान कल्पवृक्ष जय धन्वंतरि नामा वैद्य समान जय त्रिभुवन नइ विषइ कल्याण को समूह तेहना कोश
ण तेहना आकर हे दुरित रूप मइमत्त करिक हस्ती हस्ती ते सांजिवा सिंह समान २ हे त्रिभुवन लोके अखंडित आण हे त्रिभुवन स्वामी ३ कुण सुखद
ता करि सुख देजो जिनकरी यइ सामान्य केवली तेहना धणी श्री पार्श्वनाथ स्थंभनक नगर स्थित ४ एतलइ करी नइ द्वार कह्या हि
व वली पहिलु द्वार एकेके काव्य इ करीनइ अनुक्रमइ वषाणइ छइ तिहां पहिलउ कल्पवृक्ष नो द्वार कहइ छइ तथा हि तेस मरंति लहंति जे न निवर
उत्तम कलनै धम सुवम दिरणे इ णण पुरुहिरज्जि हि पिरक हिस्तरकुय [illegible] सुकु उदपास पमाइण इय तिहुयण वरकप्परुक्ख सुक्खे कुण २

उप्र×

मह जिण २ व्याख्या तो एते स्मरतां आनंद ति करतां वासैक त्रिसी पुवरहधान प्रव अनेक लब्धि करतां स्त्री [illegible] धन्य रथ का ति मां यथा जव रागो कंश २
लिख श्री दिसागो पकोइ व इस्पुयाजका गउ हरालेप्ति तिलक गरमास उर अलसी रहरिम थरथति तमार परिमकावाद मिलिंदर राज मासा ३
रप्प सूर २१ उबरी २ रक्ज लह रस्वरणो रक्कलायरी रथ ए रथ धन्य सुवर्ण अणघट्टो सोनऊ दिरलक रतां घट्या सुवर्ण अथवा सुवर्ण तिसा मान्य
पणे सोन उदिरलक रतां सूर्य ति एकरी घर्ल शह इसमो जे राजा ते उंडे तो गवेडण करतां मनुष्य दिवते राज्य तो वी अन इ पथइ पिरक हिक रतां देषइ ××
पिण ते मोक्ष के रवी वइ असंख रह इ अनंत बइ जि हां सुख उरक रतां नारदे पार्श्वनाथ इसा दइक री इणि कारणि त्रिभुवन मनुष्य मनोवांछित
पूरणि कल्पवृक्ष हे श्री पार्श्वनाथ सुखकरो मह मुझनइ हे जिन एतलइ पहिलो द्वार वषाण्यउ ३ अजरअमर परिज्ञ नक्रम ठी हसु जिण चरक सीण
रव पणखुमनर सज्जिय सूजिण उरजिण सरण रसायण णल ज्ञ जंति उण इव जय धन्नंतरि पास मह विउ रोग हरो भव व्याख्या हरता वनि णकहै २ ××
जिके जाड संघया छइ सुक्र जिणके हनाग लित कष्ट इकरी परिज्ञ नरा ह इसम्या वे मन जियारा नष्ट नाठो छइ रोज शकन पणा माद इविसे थप्प
इ दियाज्ञा णिवा चक्षक आपति ण इकारी थी णद्ध अवइ रखप अरोग इकरीकुल इबल घया बइ तिम श्लरोग इ बाजित थया पदमाजिकेन
रम पुष्प तिके उण दे जिन नाम स्मरण ते हिज रसायन अमृत तिणे करी जपुत्री सुहव इपुण शहइ वली मया जिह वा ज्ञ ता ति इसी विसेषण इस ×प×
नारवे तिण कारणि जन्म मांहि वास्य अंतर व्याधि माइ वाधन्वंतर वैद्य समान श्री पार्श्वनाथ माहरा पिण रोग अक्षर णहु जड होर पदमो क
रणहारक विसरोग जाते तिणकारणि सामि पासे श्री पार्श्वनाथ आगति प्रार्थना कीधी ३ विद्याजो इस मंततंत सिद्धि अपयनिण भुवण ए
×उदगा जिणो× य अब विइ सिद्धि सिआइ उइ नाम णि अपवि तुवि ज्ञाण इ दे इय वितउ ते तिहुयण कल्लाण कोस उदर भास निरू उ ४ व्याख्या विद्या करतां देवे २
नोस्मरण इसो मिथ तिथवा वाहिक मंत्र देवता नो स्मरण ते इका मणा दिक सर्वसाधि अपयं जिण क अयम विग र मिम त्रिभुवन मां ऋद्धि अ २
र्थय तन डो आलेय कारे सिद्धि तिके पिण सी जिते किसी अणिमा २ महिमा ३ लघिमा गरिमा ४ प्राप्ति प्राकाम्य ईशित्व वशित्व ८ प्राकरत २

3

मा न्हउ सरीर करी सकइ छिद्र माहे पिण पइसै ते अणिमा १ मेरु सरीषो पिण मोटो सरीर करइ ते महिमा २ वायु सरीषो पिण हलूओ सरीर करै ते लघिमा ३
इंद्रतणे वज्र करी पिण ते चालवी न जाइ ते गरिमा ४ धरतीइ बैठो मेरु पर्वत नइ अग्र पुरिस्या लगावइ ते प्राप्ति ५ पाणी माहे जिम धरती ऊपरि चालीयइ तिम
चालै ते प्राकाम्य ६ देवतानी रिद्धि विकुर्वइ तीर्थंकर चक्रवर्त्तिनी रिद्धि विकुर्वै ते ईशित्व ७ सर्व विश्व वसि करै ते वशित्व ८ एवं अष्ट महासिद्धि विनासीजइ वल २
ता वरतनो मस्तक पद्मावतीकना चावते पणि ए विघ्न पायाति तिणि कारणि त्रिभुवननइ विषे कल्याणनो कोस संसार पद्मिनी निसरो कस्यउ ४
रवइ पवत्ते मंत्रतंत्र जंतानी इविसुरे चरघर गरल गड्डू मास्व्यारोग्य विगडइ निश्चय समस्त पछइ निष्ठारय वयकरे डरियइ हरो सुपासदे
वड रियक्क रिकेसरि प आरम्भ १ रुद्र क आहु आक्रं मनुष्यति एइ युक्ता की धड्डे मंत्र देवतानास्मरण तेउ कामण टिक यंत्र अक्षी सीयादिकने सव ×५×
तान्हरै नामि विफल थाय जिम सिद्धरायडे सिघदे २ वर समगर्नेमा हिसउ किमाता इंतते बाधीसा सन्नीयइ पछे एकेडो गाढउ पाय करी को जिम उ
तिवारे नामनुइ श्वुरिसि हि १२ अक्षरयाजी नामदीधे सिद्धरायडे सिघदे ए तं उज्जाणि वउते सर्व श्रीपार्श्वनाथ भगवंत नइ नामि मिलीधइ विफल थाय व
रअनइ घिरजे गरल कहतां विस तिहां सर्पादिक नउ ज्वर विस जाणिवो व गउनागादिक घिर विस अनइ ग्रह सूर्य सोमादिक अनइ उग्र वीहामण २
डेस्वरा अने रिउ वयरी तिह्नी जे वग्रे तिके उणि गडी न सकइ अनइ डरिवतडे मनुष्य तेहने जे सार्थ अनर्थइ करी ग्रस्ता तेउणि निस्सारय कृपा
करीनइ तिणि कारणि माहराउ रितपाय पणि हरउ मारो ताविसदवड्डे उरियक्करिकेसरि उरितरूप हस्ती सांडि वा केसरी सिंह समान
म× पाउइयाणा यंतेइतीम दग्ध दरसुरेवर रकसडरूकफणिंद्र वंदे धोराउजअड्डरेजे अवसवारिरक्कइ खुद्दमसुडो इणि डोइयो इयनिक्र
यणअवंघियुयाणजयपास सुसामिय हता हरी आणपंथे तेसीमकहतां रोइनयकर असिउक्क असुरवर देवता राक्षस डरक फणिंद्र आवन २
गकुमारनाइंद्र चोर अग्नि अनइ जल हरे शाइइमेघ ते पणि थमइ अनइ जउ चारी मत्त कष्ठपादिक जीव जलचारी सिंहव्याघ्रादिक जेरो इदद्र
भैमित्र भयंकर रुद्र हिमकाप अतिर्यचडो गिमीगक्रमग्रु थवइ निवाड एसार मंत्र तंत्र नीजाण स्त्री जोगी तेहवा इजक्रस्तस्तपते पणि उद्धारी आइ २३

येपंसीक्रइ तिणि कारणि त्रिभुवन माहे उमारी आज्ञा थमी किद्धीन पीजयवंतो जिश्री पार्श्वनाथ उमीरे गाझरवे ६ पछिय अइ अणडहदब्ब दिसरनि
मरोगे मंथेचिय चारुकाय किंनर सुरखर जमुसेवद्धिकमरलजयनपरकालियकद्रिमल मा उवणनयसाभिपासमस्मद्दह रिउबल ७ व्याख्या २॥
आर्थित कहतां मांग्या ऊइ छि एथ अनर्थ जतेजिहइ कं वीहनावइ उस्सथयाछे मक्किनउ जे तरतिलइ करी निर्मल छे रोमांच इकरी नइ अचित शजितज
×३× ईवइ जेहनी चारु उधाम कायदेह पंवाडे किंनर देवता गागायं नर मनुष्य सुरवर देवता तिके जेहना सेवइ इक्रमय-प्रयातइ पकमल तेहना जगजे
वेछिणि परकालियक थोयी वै कलीका जेनइ घियइ रागद्वेषरूप मल तिको त्रिभुवननउ स्वामी श्रीपार्श्वनाथ माहरा महारिपु वयरी तिया शवल ७
एसुवक्रमै ६ कार वघीएपा दिवली दारद्यपाणीयेवइ यथा क्रय जोइय कमल सस जरतयपंकर कुंडर ३ तिक्रयण जणआणवचंद्र सुख
णसय दिणयर अ क्रयम इमेयणि वारिवार अक्रयजउ पियामद्द दंसण यहियय पाम नाह नारसण क्रणमह ८ व्याख्या क्रयक-न्हक्रयवंतो क्र दे
जोगीश्वरा चित्त तद्रूपडे कमल तेहने विषइ तस नक-उमरसमान १ तिम सातसयरूप पंडरति णसांडि वाणलीहे मदोन्मत्त कुंजर हस्तीसमान २ त्रिण
भुवननइ विषय जेजन कल्लोक तेहनइ हर्ष उपजायवा जणी हिसा नकलास पूर्णचंद्रमा समान ३ हे त्रिभुवननै विषे दिणयर क-सूर्य समान ४ तिमक
नउमा हिमतिरूप मयणि क-एही तेहने हर्ष उपजायवा जणी वारिवाह मेघसमान ५ जगगउना जे जंतु ते हैपितामह दादा समान ६ अस्सणे ना मनगरने विषइ
रुसाथकारे श्रीपार्श्वनाथ मोक्ष परिनाथपणो थणियपणउ करउ ७ एहवा रस सहूपपणेक स्या दिवतेहिज हार १ तुक्रम इ वषाणइ छै तिसोएह प्रथम हार गाथ २
वक्र विहवसुअवसुसुमवन्नि डेमछिदिमोरकधमंकामकाम नर नियरसाक्षिहि जं श्रा यहिं यक्ज दरसणउ बक्र नामय सि क्व उसोजोइमणकमल ×४×
समन उहपासमविद्वर्ड ९ व्याख्या बक्र विधक-धणिवस्ये करी वलैआविसवैयुगरनइ विषे विसुरउजरो २ वलीतिणि मे जि अवस्त्रे पणि वर्ल ओमाहे
स्वरमतीये नी रूपपणा माहे अन्नपणि वर्लअ आवोदे तियादो वारमत नेविषइ उदनोश्वस्वरूप वषाणइ तिणि एहवी श्रुतेकरी वर्णव्यो पणि किपो 4
पृथिहि कहतां पहिले परं कि से अविमोक्ष धर्म अनेकाम रूप पदार्थ तेहनाडे कामी वांछक नर मनुष्य तिए आपांपणे सोहे छिणि कारिणि थाईछे घणेद
शनीए॥

तिणि कारणि त्रिभुवनस्वामी रुद्र कमठ विध्वंसवि वादिक नेनामे करीश्र मिटइ जे लोक तिको श्रीपार्श्वनाथ भगवंत योगीश्वर नाडिके मननें ते हिंकमलेते स्मर
विषै तस लोकरइ सुमरसमानं सुखअक्षरो ॥८॥ एतले करीनें एक दारवषाणे पा तथ्य विसरेण ऊणिरक्षमणसरह रियसरीर हितरनियमय विसुसु
लगयागरगिरकरूण स्थित दुसह मन्निमरंत कूतिनरना सियगुरूदरामह विस विमिस्र सयपास सयंपंडरंकुडंर ॥९॥ व्याख्या नय कहेता सात नय
यथा परलोकभय १ इहलोकभय २ आदानभय ३ अकस्माद्भय ४ आजीविकाभय ५ मरणभय ६ श्लोकभय ७ तिणे करी डि विकछकं व्याकुल तण आ उडरण
कणटरा आक्रदइ डिस्नाक्षशानकहतो दांतमासे मा द्विदांत तश्रनड मिलिवेकरीने घरहरियकं काष्ठी उडाडियामनुष्यारोसरीर नर तिनकं प
दि सिडो यरस्याडिया मनुष्यामा लोचना विषम कं विषवाद वंतप्रयाउडा सुमनकहतो चेतनाथी करीर हितमय्याउडा गुरगिरकं नहीसमजाती
डां हनी वाणी करूणि हिकरुणास्थानक दीनदयामणा क्रूआवे एहवाडिके मनुष्य एहवेश्वस्थानक मांस्थियतो ऊफने सहसखिकं तत्काल स्मरत २
ऊनो नरकं मनुष्यनासियकहरूगय उगुरू मोटोतयडियाघकी एहवा हवे तिणि कारणि मारराधिणा विश्वविक ण मामिसिञ्चयकहनयश्रीपार्श्वन २
वसयरूपीया पंडरस्नां डिवालणी कुंडर हस्सीसमांन ॥२०॥ एतले बेदारवषया पेपास विंयसंतनिस्रपनंतपवक्षियावाहपवाहपवहडहडहदाहसुउ
सियमन्नहिमसुसमुलपवनअप्पाणं सुरनरइयतिकूयणआणं दवदडंपास डिणिसर ॥२१॥ व्याख्या पइ कं ऊफनइयासवियकं देवित्रइसंतकहं संक्षे
नमनुष्यतियारा डिनेत्र पउतेहनो डे ज्ञते तेहनें विषइडे पवन्नियकं विस्तस्यो वाहकं हर्षमा अस्मतियेरह डेय वाहकरुं शरतिणइ करीपवहडकरुं ता
वशाद्यो बडरूढ चिरकालीडेउरहितेहनो वाघसुउलियकं उक्तियाउठकोमिरोमराडउकुडिनमईवड मन्नहिकरूं मानइबडामामान्यकरता
उद्यसजकहता स्नाप्यवंतपुत्रकं यविज्ञापणइ आत्माने सुरदेवता श्वनेनरकं मनुष्या इयकहइ इणि तिक्रयण त्रिणि भुवनना आणंदरूपउय
डायवालणी चंडमा समान ज्यवंतो हे पार्श्व जिनेश्वर ॥२२॥ दिववल्ली अफ्फारत रंपारवषाणे बे तुहकल्लाणमहे सुघंटटंकारव पल्लिया वल्लिर
मल्लमहल्लभत्तिसुरवरगंडुल्लिया हल्लुफ्फलियपवत्तयंतिभुवणे विम्हसवा इयतिहुयण आणं दवंदकय पास सुहस्सव ॥२३॥ व्याख्या ताहरा ई पं ४

×द्विजय×२ ×कमठि×३

×गिराक×
ता×
×वे×
×सिर×
×द्वि×

×सर्वविल्यादइईइ×३
कल्याणिक महोत्सवनें विषै घंटइ कं सुघोषनाम डेरहरडोडानपिडलीते हवीआधी कंचयेपैश्रमालकरीसहितम्ने पणदेवतामिलीचडावेते हनोडेटंकार
वशब्दतिणे करी पिंडिनियकं वेरया वाहियरकं वेल्याप्रानपहिरीबेमाला महत्वनिमिनोटी घणी सक्को करी सहितपए वाडो सुरवरदससवेमानिका डंडावीसभुवन
पतिना इंडडा बे ड्या तिषी मा द्विलाइंद्र ह्व्नै बत्रीस व्यंतरें उम्म्रनेराषिणपणा देवता गंडुल्लियकं रोमांचितस्यदेहथयालियकं हल्लकफलपवत्तविश्ते श्रिने
भुवननें विषेमहोत्सव कईनइरह्यो जे इणिकारणि त्रिभुवनइविषेहर्षउपजायवासणी चंदमासमानं जयवंतो हे पार्श्वनाथ हे सुरव नाउपस्थावणा
सार ॥२३॥ एतले अदारवषाणा हिव बरावषाणइडे निम्मलकेवलकिरणनियरविडू रियतमपहयरादंसियसयलपयछसत्थविछरियपहामर काल
कलुसीयहरूणदृष्टयडो यलोयणहयोगो यर तिमिरइं निरहरपासमाइसुवनत्रयदिवायर ॥२४॥ निर्मलो डेकेवलज्ञानतेहिज किरणना निकरसमूहतिणे
करी विडूरियकं गमायोउडे समकं अज्ञानपरयरसमूहादंसियकं दिषाड्या वेसकलडे डियाजीवअजीव पुण्यपापादश्रवसंवरबंधनिर्ज्ज
रामोक्षनेमोक्षरूपपदार्थनवमार्थसमूह विछूरियकं विस्तरयाअछेपसारयाकहं कांतितेहनो सरकलिकं कलिकालतेहनें विषइकलुसियकं मलिनहोडजनक
मनुष्यतेहपइयकलोकतंकं उभ्रमरीयाजेलोकतेहनाडेलोचवातियारेअंधोचरतिणि कारणि तिमिरकरुंअज्ञाननिरूनिश्चेसंघातेहरक गमाडिइश्रीपा
र्श्वनाथ हे भुवनत्रय विषि दिनकर कं सूर्यसमान सूर्य केहबो डे निरमलो डेके वलसहस्र किरणनो निकरसमूहतेतिणि करी विडूरियकहत गमाड्याडे
तमकं अंधकार तो परकरसमूह दंसियकहइ उग्रहकिया डेसकलपदार्थघटपटादिकनो समूह विस्तस्यो डेप्रसाकं कांतिते हनें सर कलिवेहि तिणे करीक
लुषितडे मूर्खलोकतियाराडेलोचनते हनें अगोचरडे एहवाडे सूर्यतिलिसारीषडो श्रीपार्श्वनाथडाणिवो एवीडो अर्थ ॥२४॥ एतले ४दार भया तुहस
मरणजलवरिससित्तमाणवमेमेयणि श्रवरावरसुहमङ्गबोहकंदलदलेरहिणि जायइफलभरियरियहदाहश्रणोवम इयमेमीयपमारि
याउविसिपास मइ मम ॥२५॥ व्याख्या ताहरा डेस मरणते हिकडजलवरिसकं मेहतिणे करीसिन्न कंसींचीमनुष्यभीमतिते हिकं मेदिनी पाणिके हं
वी डे अवरावरकं नवनवा डे सूक्ष्मनिगोदादिक ना अर्थ नइ बोधकरूं डी वज्रडीवादिपदार्थतिहिडाकंदवाक नवाअंकूराते हमाहे दलपत्रतेणेश 5

×वियय×
×नी×२

जयति॰
पवृत्ती
५

करीरे इतिक॰ सो॰ र्गयमाम वेडायइकइतांकपदेंफलनीतुरक्षामगधफलकासं विरतिरूपनिणेकरीजेतस्तिक॰ श्रीईस्यक॰ इसोभिडंसदास बलीअनोपम
क॰ निरूपम। इणिकारणि पदृवीक्षेमतिरूपमेदिनी १ह्लीमि रुषेउपडायवासली वारिवाइमे घसमानदेपार्श्वनाथप्रभुजमैमतिवेदिं डिममेघवेवरमिघइकदजेकरीमे २
तिनफलेकरीवर्सहरियो वइडियइउरवरूपदायपहवी २ह्लीदेवै तिमश्रीपार्श्वनाथभगवंतनेडेनामतरूपमेदेकरी मनुष्यना पिणिमनिवधेपमावा ॥२४॥ पनलइप २
वमशहरथयो। कयअविकलकल्लाणवल्लि उल्लूरियदुरवण। दावियसग्गपवग्गमग्ग दुग्गमगमवारण। जयजंतुजणयतुल्ल जणियतिहुयणअव्वरियाबकुं। रप्रभुधम्मसोह्णय
उपासमजयजं तुपियामहरु ॥२५॥ कयक॰ कीधीछेअविकलनिरंतरकल्याणरूप लताने तुसुकरवाउपसमावतारूपहेनी बेलि उल्लूरियकं॰ क पापणीपेडउरवरूपवन। दा
वियकहतांदिषाल्याछे स्वर्गदेवलोकमोक्षपवर्गमोक्षतेहनउ मार्ग दुर्गति नरक तिर्यंच नीगतिनिनेहवइ विशेषगमनक्षायवीतेहनीनिवारणहार। इमजगजंत
केजंतुप्राणितेहनेजनकसमानकहतांपितासरीषोडेरमणीमनोहरधर्मनेति किम पितापिणपुत्रनिकल्याणकरइ दुःखहरेतेजीमतीर्थिषपेतेपाइकइसाधीयलतानाइनि
धपेतिमधर्मेपिणपहवीइरजडाणिवउतेधर्मोडिते श्रीपार्श्वनाथडेजिनतपुत्रकाव्या। तिमतप्रकारकंतेजयवंतोवरतेउ। डागरमाऊंउनैविषइपितासदृशवालासारीषा
श्रीपार्श्वनाथतिणेशगटकीधो धर्म। तिणइतेहनेउपपणेडाणिवउधर्मलोकनाशीवेपिणतिनाथकी उवउवइ। इहांपिणतीर्थंकरथीधर्मथयो। अनेइतिणिकीम
एण। ॥२५॥ भुवणारन्ननिवास दरिय परदरिसणदेवय। डाइणि पूयणि रक्खसाय खुद्दासुरपमुहा। तुहउत्ति भुअबसुबअविसंसुलविडहि। इयतिजयणवहु
भीसुयसपावाईपणासहि। २६ व्याख्या। भुवनहूपडेभरएप अटवीनितेहवेनिवासवसिवाडियारी। वरियकहतांगर्वनेकरीसहितपहवाअनेपरदरिसणदेवय। अन्यदर्शनी
नीयावादेवता। वोहायिक कोइनिकरतायोगिनीजिन्हिकअवे कामंत्रहिंयासीयोनितेडोगिनी डाणिवी। पूयणिकहतांकटपुतनादिकरुउशुंतरीविशेषरविनवामा
केडयालमरतीनाअपिडायकंतरविशेष। अन्यपिणिकेक्षुद्रसुराभुर। भुवनपत्यादिकते हिक्रपसुबकरतांपडउसमूहडाणिवा। तिमर्वउहकरतांतेमक १
उथडकरतांबीहताथका। सूनहुकहवं तिनेविथपकाथकाथका। सुहुक॰ सतिमाथेकरीअधिसंसुलक॰ साथाववकासतयथका। विहडिकरतांरहइ। तिणकारण

ᐧ५

णथिसुववरूपवननेविषइसिंहसमानदेश्रीपार्श्वनाथयापसर्वउणासे। २६। कणिरयणरफुरंतरयणकरंजियनहयल। फणीकंदलधवलतमालनीउलप्पलसं २
मल। कमवासुरउवसग्गवग्गसंसग्गजडिया। जयपच्चरकजिणसपासंघसणयपुरहिय। २७ व्याख्या। फणिकहतांधरणेंद्रतेहनाफणतेहनेविषइडेफार
कखिस्तीलंफुरंतिकरु देदीप्यमान। पूरवाडेरनेतेहनाडेकरकरतांकिरणतिणेकरी। रंजियकहतांरंडेयोनहयलक॰ आकाश। फणिकणीकसिंयगुलतातेह
नाडेकंदलकहतांनाअंकुरादलक॰ तापत्रतमालकहतांतमालवृक्षनीजेउत्पल अमा अकम कुसुमतिणिसारीषोसीमलक॰ श्यामशरीर। जेनीअवलइसामएकक
रिवमाणशंभ। अनेकमवासुरकहतांकमठदैत्यतेहनाकीधाकेउपसर्गनापशुवृत्तेहनेसंसग्गकहतांसंघटतिणिकरीअभंगजितनकंपरसवउनबीजयवंतोप्रत
क्षिने अरश्रीपार्श्वनाथमोलइ नमस्कारश्रीपार्श्वनाथस्वामींदेथकीथा। इणिनमस्कारमेंकहिविश्रीपार्श्वनाथप्रतिमाप्रत्यक्षपडे। तिणमेलिश्रीतहाददीधो। संभन ४३४
कमागनगरनेविषइभ्रिमकरतांरहोथकउ। २७। दिव्वककीश्वरञ्जयणडुंहीलमोऽस्तवनकिरे। मइमणुत्तरछुपमाणनेयसायाथितमेतु। नयनणुरवि अबिणायम ४२४
६ सावआलसविलेधलाउहमाइयापमाणेनेयकासत्यविनउ। इयमेमाअवहीरपासमपारद्दिविउवनडे। २८ व्याख्या। मा हरीममंतरलसंवचलंतेइडेप्रमाणनहीछु
घनपिणशमाणनहीअसंरुद्धपणामाटेंविसशुजमिरनहीं। अनेतनुसरीरपिणप्रमाणनहीतेकिम। अविनयस्वभावकहतांअविनीतदेषगुरुपतिनमेनहीं। वलीआठे
करीविरुधकहतांघरवस तिणिकारणिहंतिहेतुसिरोमणिमो माहरुणकोनथी परंइरीतारोरिमाहत्मनोशत्रावहमाणदेवे। तेतासदगमाहात्म्यकेरवोविकालमा
[illegible] यातिणिकरीपथिवहेप्राणेकारण [illegible] वहीनिमांआथगिलमां रे श्रीपार्श्वनाथपालयकहतां पाविबागादिकडेबयरीतियाधीराधि अतिडरैदेकरी
वसापकरतानि २७ अनेरायिणरूड़ाविकदेवतातिणिआमोशार्थनाकरि किंसश्रीपार्श्वनाथस्वाग्लिपहाथींसंकानिवारतउकरे। किंकिकप्पिअनियफलुणुकिंकिंव
रूपिउ किंसनुचिंतिउकिंवेवरी एात्र मथलेविय। काउणकियनिफलुलल्लियमेहिं दुहत्तिहिं। तहविनुपत्तोताणकिंपिपडपहुपरिचिन्नहि। ३१। व्या॰। किंकिंकल
किंसंकप्पिउकहतांचीतव्योनहीं। कडुणकं॰ दीनपणोनिमनिकरीने अनइमनिकरीने विवारयांदुख्याववीतवीच्यो। तिवारेतेतोमायइ। धर्मकर्मनइराडमनरूप
णपाइहांएकउदाहरणलिषीयेछे। जिमकोइएकनगरनितिहांएकश्रेष्ठमनुष्यमहादरिद्रअनायनिरोमणिरहे। पापनेवशविद्यअनेकपेटसंबिवानोउ
6

पायकरे। परं कांई मफूरी पाले मरी। संसार मांहे पुण्य विना किमें न्हा पामे। यथा। पुण्य विहूणां नरक थिया ए परघरपाणीई धण आण सा। पंद हिस्ल हिकरे विशे
कणम हरिन पावै कि पि चिंतीयण। इम मठेम पुण्य पण ईशात सस्प उपाय करियां। श्री सामेक मन साम्मिन्द्र पुरुष पिण अकर्डि इ सो कोई उपाय उपायो ति। डिण करी
दे रिद्धि रद्धि थाय। तिवारे किण ही कह्यो सिद्ध पुरुष करो। माई ग्राम बाहिरि श्री स्वामिकार्त्तिकेय नो प्रासाद छै महा समकल छै। ते सुखे विस पूजा करइ छै। ते ह्नान मोव
तिन परदेवड ते स्वामिकार्त्तिकेय नं सेवि तिन मत्ना हरे दरिद्र जाय। अनइ नवे निधि थाय। तिवारे ते दरिद्री मनुष्य तिहां गयो। स्नान कियो। पुष्प सुं पूजा कियां। मन नो मंथ
रउ विधा यो। दाप दो मीक यो। ठि श्रद्धा स्वामिकार्त्तिकेय जी कि वा रे मुझ ने वर देस्यो। रिद्धि देस्यो। तिवारे इ दइ हैं जीडा यमन नीनरिद्र हां काल गत थाय सा। इ वरिद्री
की वाने का संकट। इम करी तिहां सूतो। उपवास मन सुदइ की धो। ओडउ पिण कीधो। इम करतां मास उपवास की धा मन सुध वचन सुधि काय सुधि। तिवार
इतेइ ने समन मांहे सहस्स स्वामिकार्त्तिकेय मोरनो रूप करी कह्यो। अरे मनुष्य हूं तूठो। मा मिहे तारे रे कोई यइ ने डिम कि आ उं ते मनुष्य पो लेपा स्वामी दरिद्र गमाडि ति
मारे स्वामिकार्त्तिकेय कसाउ अरे मो आगलि राते मोर सोवनमय आवी। ने नाचइ छै। ते मोर एक सोवनमय पाप नित्य प्रति आती एक जा स्ये। ते पांप सुवारो सहाई आव
ति के ते मारे दरिद्र जास्यइ। इ वो कही ने देवता आपणे स्थानक गयउ ति ते मनुष्य सदाई सवारे आवी। एक एक पांप लेवे। इम करतां घणा दिवस थया। ति वि पिणाध
ली सोवनमय पांप एक ठो कीधी। पूजा गीटा परीउ पांती। घर पिण न वासा तमु मि या श्रमा रकरावा। हिवे एकदा ति तिणि दरिद्री अत्यामु मिसे मति नी सणगी। वीन
मो दिउ कुण हिहां मीसवाराक वी मदाई ति हां आयं को हवे ते आपां एक सा ध मंा। हि मांटी वी लेई ते हने निहो स्का नाट कर रेतो हणीम। सवे पांप एक ठाउ केई आ विस।
कुण मदाई फिरी रपग ठो। ते पर वो वीन वी एक मोटी ठाणी जा पी हा पिमा हिवे ई तिहां गयो। मोर नाच तो देवी एक नउठी गी मारी। ते तउ ते देवता भिष्ट न मोर पार
ली गयो। तिणि दरिद्री मनुष्य नि देवे पामे। अचेत थयो। मारी रूठी तरु करी सूत्यो। तिवारे ति णि दरिद्री मनुष्य मन मांहे चीत व्यो। विसपके न ही मा हार घरे ते सोव
नमय पांप घणी ईछै। मा हरे वयते मा हरे दरिद्र नो गयो। वली सर्व शोक कसी स कृत रमी। टि व पत रोध णी वृ। इ वो वीतवी घरे आवीयो। आगलि देषि तो सुन गीठ प
री पनीहे। पर तेमा सिया नहीं। सोवनमय पांप तणी ठोम कागलां री पांप पड्या छे। निद्धि सर्व गई। वली सूल में लखमी आयो। तिवारे चेतना आयो ति णि स्वामिकार्त्तिकेय ६

री द्रव्य को म ही। परं इषण मारउ द्रव्य। पवीड पिछे पेको न मिता नानो। ते ठ्डिम ठेइ ति मरिहि लाे सलेप रि णामे देवता आठा छै। तो किड गयो पलीमा पूण्यरि णामे ता ते घ
श्रम मां पे मोर मारिवा दको। तिवारे दरिद्री यारि दी जरह्या। तिम मइ पिण मा नि करी डोन चो मिधी जि ते चीत व्यो। वली व चने करी कि सुरवा लपान हीं। नवनि करी निपि ण जिह
मिहां पछ। छण उ डिण कारणि ह्यास्तु मांहे कह्यो छै। वचनरा व्यापक इव ण रहे। यथा। कुंगि कि सी को न विहरे। को इन कि स पिम दे इ डी। सं तणी ए पीड़ छे कुगग्राम पणो करे
। १। सा ष क यान कुं कं मीडा णि ड्या। डिम उर्की णी नाम नगरी छै। ति हां अरि थ दि नो नि धा न पि डितां मा रे स धी न सोडरा ड राज्य करे। अनेक ड पियां वा दा नि इ दरे। इस
इ इस्ता वि एक मूर्ष मदा दरि द्री श्रा स्णवासे। विण नगरी मांहे। पर सेर निश्चत्रि श्री ण चतुर रूपवन्ती शीलवती गुणवती पतिव्रत सरवि स चम का र णी स्त्री छै श्र नेक स्त्री ने
लक्ष्मण सरी। एकदा ह्रस्या वि चितिण इ मन मां रनि क ह्यो। अहो स्वामी ई कि मइ प्यथा डे। विणा घर मउ श्मा पारव ले। कुइ कोई काई एक आयुध मां गि श्र नि ड व्य था टि। तिवारे ते
सा ण क हि वा ना गो। दे शा स्त्र णी इं म ड ज णे ड ड़ डे पण मोर थाटी देसी ह्रने कूवय वीजी मिस ते षात नी आम म करे। मो वा ते पाडो कमायो। काई नथी। उडाणी। रूपा णे ने
पर षा द ण दि न दो। तिवारे स्त्री कह्यउ स्वामी प या स सा थी। आवइ इ का इ नो रण का ध णा न थी। पर इ णि उज्जयणी नगरी नो धणी सोडरा डा ज छे ते ने सरी सभा मांहे सवेरा
ले रा पडूं मो। एवचन डा ई कर इं। उ ड़ो अहो सोडराजा नृपति छे। अहंकार मांहे का सं थ यो। तो मरी यो। एक गोवाली यो। उज्जयणी नगरी ने पा सि ईं दा व नां मा हे गा यां च रा व
तो थी छो। रूपत लो श्रुमा न का सं क रे। एवचन श्री सोडरा जा आगति रेकरी। ड़ी सम क हो। एह वो स्त्री म डे वचन मांस ली ह्रा स्त्र ण धाम तो श्रीसोडराजा आ गलि गयो।
सरी सभा मांहे एहवो स्त्री नो सी पा य उ वचन क ह्यउ। डि अहो सोडराजा नृपति ने गुमा न मां हे का सं वइ दो। ते सरी खउ एक गो वालीयो उज्जयण नगरी ने पा सि छे दा वन
मांहे गाय च रा व तउ दी ठो। एत सो श्रु ति मान उ रे मकरो। इ स इ वचन क हे ते सोडराजा लाख पसाउ कीधो। ति ण दली धो। घरे आ व्यो। घणा व रि सने ड्य से ग व्यो। पांधु प २
थ ग। केतले एक काल ति ध न षरच थ यो। ति वा रे वली स्त्री ऐ कहाउ अहो स्वामी पहिलो मा हरी बुद्धि लाख पसाउ आ णो। इत उ हे पत ला वि वस सी म सो ग व्या। हिव
पु मे पिण मा टी ठो। मोटो ठो कोई एक बुद्धि करी लाख पसाव आणो। तिवारे तिणि अति मान लगी कह्यो। रे म्रूवला आसण ते मो व की पि ल मा री फूदे। मो आगलि बुद्धि वंत
इक थे ने पि शि व मा हरी बुद्धि। एह वो व च न क ही ड्रट की अनेनी क ह्यो। अपि स्त्री मो बीत सें वा जा था। हू पहिलो मेरो गो वा ली यो क ह्य उ तो। तिणि १०००० पसाउ की धो। हिवे
ला क ज हि म षणा ला ष पसा व करे। एह वो चीत वी व ली सोडराजा आ गलि गय उ। सभा मांहे एह वो वचन कह्यो। डि अहो सोडराजा नृपति ने गुमान मांहे कासं व

यवो तो भरी पापणाई ओवा वीयां मैं गायां वारवारी थाने किचं । एहवो डिवा रे वचन भी सोढराजा थे मांस लेयो । तिवारे सोमदारा ने कहयो हुं रे पहने माय इ वमी अमइय
उकि यो । एहवे वचने पदी कुमडां मारदेई वब्राह्मण वचने ने श्रमाणि पउकि माहि घाती । श्रठइ ब्राह्मणी बारडो बालागी । डेसर्वो रला पपमाय लेई । श्रडां सीमना श्रडं
ने कि ले पकारणि मकरवा २ दिवस थयो । त्रीजो दिवस थयो । डमव विसम थयो । तो पिण न बीर ना थयो । तिवारे स्त्री यस मम मांहे वीन वीयो जो । ते ब्राह्मण वचन ने श्रमाणडां
ली यह कडवं घाल्यो । तो तिवारे स्त्री वर्क ऊाई उपाय करीने ते नेगो मन सूं । तिवारइ तिणि ब्राह्मणी स्त्री नमस्क नकिया । भी धी वइमम मा बापा पिया काऊ लगी धी लेई कांनसी
मघा त्यो । उसवी मी माला शाषिका नी । राम रुढ २ उ पती श्री सोढराजा श्रागलि आई । आसीर्वाद दीधो । मघा । विरडी वचिर वेस । विरंपा इ यमे दिनी । बिरमा श्रयलो कोने २
२१२ यमनो रथा थो । एहवी श्राशी स । विकंस पडो कीने दीधी । तिवारे सोढराजा । काऊ न नो स रूप रे थी । धैर्यवंत थयो । डमइ यो । डेरे मात एकाऊ ल श्रापिथी
लेई कान सीम घा लो तिस्या मा टि पहनो कत रच्या पो । तिवारे वा स्त्री कस ऊ कां ने गुणी यो डो ऊवप नयणे दीका म ऊ । नय णकां न श्रठण गयां । तिण पक ऊ ल नगा । ए
पहवो डिवा रे कह्यो । तिवारे सोढ राजा श्र वो । कस उ डेरे ब्राह्मणी कि । कांई लाह रे डो इ यो ने मा गिता हरे कवने स्त्र यो । तिवारे ब्राह्मणीक डो मामी । मा हरो वल दएक
गयो थ इ ते श्रा पै । वी डोप वे मांगी स राडा । ये कह्यो डा ई गयो था ना पा रिडो रे । डेउ हारो बल दहवे ने ल्यो । ब्राह्मणी कह्यो । स्वामी राडेड मा हरो बलद गयो पाना मा हिले २
न ऊ थे । मा हरो बलद सीग पूठ श्रने ४ पग रहित थे । वे पगो थे । तिवारे राडा पिण न धथ ऊ कजा ण्यो । डि एहनो बल ने ब्राह्मण । तिवारे बंदी यावा मा हि थी कादी श्राणी कन
उकी थे ने ब्राह्मण कह्यो । एता हरउ बलद ऊ विरा लणी कस उडेड विराडेड । मा हरो बलद मही सहवे । सोढ राजा तूठे थके श्रने कइ श्र दीधा । ब्राह्मणी रेवचन ने ड । साथ
थो ब्राह्मण पिण सुषी ऊश्र उ । धिय मंत्री सूरे राडा ने प्रछो । स्वामी इ ति ब्राह्मण पहिलो कासे कहत्र उ डे ते मरी थे र गो वा ली यो । हे का व न मा ढि गा या चार ते दीधो । राडा
ये कह्यो । श्रहो मंत्री वरो ते गोवाली यो ऊ ल डो । ते हनो उ पमा मु ऊ निदीधी । तितिमे श्राप प साउ की थो । श्रनइ थी डे मै रे कह्यो डे घणा ई गो वाली या दीधा । ते घण २
ईद रिडी फिरे उइ । तिण सारीषो सुऊ निकी थो । तिवारे थी कि घाती यो । वली ब्राह्मणी रे वचने तूठो । सुषी कियउ । एसर्व वचन राफ म मइ । एहवो मां ते ली सर्व लोक
उमी थया । निमहे मनुष्य पा रूद वधन करि नेमा डो डथी पासे यो । श्रनइ डे मनुष्य तनो वचन करि स्य इ ले ते ब्राह्मणी नी परे सुषी था स्य इ । ते तिणि कारणि तो ।
कसं वे लो । परी । श्रसं ब ध यवन । वली किंवन विठि कर तो । काया ई करी किसी २ चेष्टा कीधी न दी । अपितु सर्व कीधी । वमे कमा ई रो इ दे थ नाम यो थाते श्रनेकई ७

अणार्धे न णा पिण की धा म स्त्र कन मा यो । सर्व वीडी पिल थे मी चेष्टा घणी ही कीधी । देवने देव करी नमस्कारो । गुरु स्त्र दे माफक नमा न र्थ धर्म भी केवली घणी तनकी धी । श्रनंत काल
मिथ्या श्रमा हि रु स्यो । हिवमिथ्या चे करी मोहि त मति थका । श्रनंत ऊ गले पराव र्त्त सी मडा मोह टि कर्ष क वे रसि रित या पाण ने म्यायें । श्रकां म निर्जरा थि य पा प हे नि करण
करी ये थि ग्रहे स्या मनक में पा वी । श्र क र्म नी स्थिति सर्व प स्यो पम ने असंख्यात में सागि ऊणी एक कोड़ा को डि सा गरो पम की स्थिति लो । तिवारे य या प्रवृत्ति करण करी ये थि
समीप श्रावे । ऊ थि भि श्र नें नी ऊस कि णी श्र व स र्पिणी का लि न घी से रा तो । तिरु अ पूर्व करणे कर ने करण । कही ये विशि ष्ट ज्ञान गुण पाथे थपा वे । वे श्र पूर्व करण कहीये
श्रकाम निर्जरा ये स य मेव पी णीध पा वे । श्रने मिथ्यात्व राग द्वेष परिणाम ने ग्रंथि कहीये । तिणे ग्रंथी ने भि दि विके थी थे । हि यरं क्लिष्ट निप णो संसारते ये मि स्या मिय श्रावी निर्यथि
ने दमक रि वली संसार व धा रे । तिणि कारणि श्रिमा श्रनाच रय ऊ णी श्रनेक पार्रुह चेष्टा कीधी । परं पाहई चेष्टा करि ने कांई न थी करी ने हिडा श्री जिन धर्मक परिग्रह श्री सदहणा श्रावे तिव २ २५४
रे ऊ मोक्ष म डी कडां णिये । ऊ मना मिथ्या नाम ना प स ऊ पा इ ऊ ण पणो ई की धो । परं जिन धर्मक प रिग्रह सदहणा श्रावी । तिवारे कई माने ड थयो । सुख स वो भी पणो । घा ष्या । वल्ला थी थेक
घा न ऊ ह्मता ऊ ण थे डो यो । यथा । इ णे दे ऊ हे श्रु ही पि भरत क्षेत्र नामा मि ति सी नाम नगरी । तिहां नाम विना मा ऊ प धप तिवसि । रि द्धि वंत सर्व नो कमां हि न्नाय कवत को वि वरइ ते नमा लि मा मा आनंद सेठ
मा थाप ति य कदा श्र का चि त्य ई राति ने वि षे ऊ म्यो । परक ऊ टं य वि ना मा हि प णो । वा ल विना माग ऊ मे कइ एक श्र र्थ नि मा कर्म की धा ऊ वा । ति ण में लि इ रा ऊ रि द्धि व न थ यो । धन मी ल सी ला
ऊ पा म णि मो ती मा लि उ ग्र पोना रा ड प न वी पद ल्ली य णू र धो । ति णि कारणि व ली कां ई एक से द वो सु ऊ त क छे ऊ णे श्रा ग रुव वी प्रो म ऊ ई डो ते स वा रे हि वा रे सूर्य क्री म स इ ए
ता नि क ऊ रे । जि वा रे सर्व या ती गो श्री मि श्र य रि ऊ म नो क ते डी स म न पा न स्व वि म न वा दि म न्या रे श्रा हारे मो क वा ड़ी श्रा वी । सर्व लो कां मा म रू व न उ ने त णी न ा र श्रा पी वा क न ा मे पा श्री ले ई ५ ६२४
क प ई श्र ... मा श्रा म दी ऊ ... ई न प द्द वी चिं त मा क र तो श्र मा स म म य थ यो । प रे श्रा हा र मो क न ा क रा यो । सर्व मा ती गो श्री स ऊ म ता ई वे मु ऊ डी मा या । ए ह प्र त ने घ र री मा र श्रा यो
वे मा ई वे क म म क क स्यो । श्रा ऊ ध का ऊ ण पा णा न म प्र त्र स्य श्रा र म ऊ हो प ड ऊ ली ब हु न प क रि सु ऊ ंच ी वा र च श र सू यें म श्री की ऊ म ा ट ऊ रि ऊ मि मु प स्वी श्रा ना प मा क री ऊ ने पा र ऐ
न क म पा ऊ ह ति ल ई ता म नि ल्ली न ग री मां हे श्रा व उ श्र नी व ऊ नि नि क ा ल ई श्रा ना प न सु भि ऊ ा ई उ ख र पा ण ी मां हे ते श्रा हा र धो ई ने म लो । श्रा हा र ले इ सु । श्र म हे श्रा हा । ए त न २ श्रा पो
मा ऊ ा ले ई ए णा मा ना म ध ऊ स्या मी । ए क ल्प क्षी मो ने श्र सि ध रु ऊ ा व ऊ ी व या र ल्यो । म ऊ त न ह ली पा र णो । मा व लि श्री न ग री मां हि रि ऊ र्ई ल व ना चे ऊ लि गो व री ... ले ई श्रा हा र प ना स्य श्रा वी ता
रा म रु ण वे ना ष ण ी मा ठे श्रो ई ते श्रा हा र ले यो । नि श्र ऊ ी व ड़ि मां थे थि । दे चं द क ड़ । नं ग र से श्र ण ता चे न रा ड़ा । सा र्थ वा ह र रा फ व रि ड़ा । ता पा री । क मा । क ऊ वो । प्रा दि क ड ी न ड़ो डि ३ २ 8

४६॥

इ थैतेहमैवणामकरेडैकं पोक्रमतोतिम वांणामवर्ष पांवहरेमाह्नीवोप्रणमकरि पहवीश्राता पगाकरतांतरीरइडस्वकथयो त्कोवयोमिर्मास मिश्राशितव
योक्रविवाविमिथारीहामममी तिमपरी हवी मारीगामकपरिपातीकाहइ तिमहामवाजिवा वाणा हिमह्नमी हंपनीमालितकं केपमीहवे तिसीसोणिमं २
सरहितमसरीरमीचांवर्णनोवई सूथमाममीडेहवीममीकालीतेरवीसामक्षणइपगश्रागुमीडई कामनीश्रापमरिथीडेवतीमापवेट श्रनमशगिएकहुई डेहवी र
कीदीवमीतिहि बहहरकाबिवा वेकनापयमवामनापक्सकाम्मेमरीपंमीन एकडीवनेवजेफिरइपिरे ठि परंनाथपूतित नजिगारनकी एहवो नाममजिताप
मथयड तिवारहमवमांहिवीतसोडेमाहरेसरीरमाहेवजनोईरवही वरंएमजेपिणवनममइ तामलिखीमगारीमारिकहई रुपमंगतीडेलाई वंक्षमित्रतियांनेशव ३
एथपगरणनक्रमयथापवकांतिपरवशीईसानिकृणिकुरगीकुरपरीरशमाणमंकेडेतिमणायेश्रापणेकामासुडकरीपाद्योपगममसंथारेकाल श्रणचीतवीय
कोविचरि संपवडवीतामा तिवारइशतावयो नामजितीमकरीमाहेकईसर्वेपश्या वाणमलपंबतमपश्या पादोपगमनसंथारोलीधउ इतिश्रमाविवनचेवा
नामराजानीश्राविकाइहहविवनइ तिपवेवजतायस्वकिकामितामजिमामालापमदीगो पासीमाहेसर्वेवस्नामिलीश्रानापसलापकरिवालागाकहोश्रापणेमस्त
कि करू श्रविगयो विवलाईईकोनरसी विपिका वणिनामजिनामथयसीसयीनेनेईसतीबिवनदीठी किमकईश्रापणा रूपदेखाडीनियाणेकरांवाहिमतेनामजि
तपस्वीकाल करीश्रापणेईइहविपवीश्रानायविमिवैसारानश्रनीतिमम्पर्श्नीकृत्या तिहारूवरूतपरपरवर्तनतिनिसा तेकिपमशुधात्रको पंवे किमरूपकी
श्रातिसोहुंतीवेतः स्वयमन्नक्षयणाश्वैसाभइलिविर्जपतिमीश्रपरेदेश्यवेवगतितिप्रेकाश तिरश्रा नोकनपश्रमंरमाश्राईपमप्तुइको पमाहिहोतेतामजिनामातप
सीईश्रानइत्तिपाहोवगमनपद्याव्रेकरीहुती तेतिहांश्राव्या वस्त्रीमवदपालकलीधा श्रवेकरिहदेवतानेवेश्रावालमविपाडिवालागा वहिरूपमीलेईनीवर्वकावरिकए ५
काधोनविवानमस्कारकरिवालागा इमकहोतो श्रहोतामजितपस्वीश्रहेश्रम्हश्रश्रनाथछाउ श्रसरणछा श्रम्हारेइवरवेचनाकामराजमनीनीपुणी उवीगयो तिलिकारणतुम्हेका
उमांहिकानकरीनेवलिवियाराजानीउ ईवपिषेश्रपदो तिवारपरीनेहेश्रम्हारेइइवदेवोकवितानागो सामीतिहांउम्हेईहरईसकनिमम वरईश्रमर्सपातिलागो ६
गवइलिंणुएनोफलदेवतापणोश्रइनेतुम्हेनहोतिवारतेतामजिनापमतियाबलिंवेचानामराजनीनोदेवतानोवचनसांभजीनिगारमावश्रादर्योनही श्रबोलजरूट
ईरहो तिएदेवतानेदेवांगनावैवेतीनेमेवानिफेरनकरो पछेदेवताप्तिजिना पापमनियारमावनईश्रोतेदेवगमर्वेश्रापणेसांगालिपजताहिवतिमश्रश्नावितर ७

९५॥ ४६॥

एगामाबीतीरोदेवतोकइडर तिवपोतिवारेतेतामजिमीतो मानयपरितरोमाविमहस्वाक पोपालीमांगतवसुकाया पुटिसंलेवणा वेयातामजिर्णिउकरीएकसोमो
मतकंथणसमइकीकालपाधिकाक्रनकरीईसाण्नामाशीहडदेवलोकदेवताईसानेइथयो मालिकवेमागरोपमनेश्राऊश्वयविमांदेवलिवेयानामराजानीदेवताइ
बीतमतोम्प्रसरपद्धीकानगलश्चयोश्राणा तिवारेकोपवंततयाककिंचिडडिकरिणहोवेपेदाउषाजिरूवूजनकप्रसतावनवितिन्यासविनानिवतिवाणीकारधुवंकरता श्रापकरुचेवाण
कोपिलतालहितांतामलितपस्पीनोसरीरसूकमद्रकं जनेतितांतेसर्वेवलेवस्थानातिलीमुरनलिमेवैधापिराईमो श्वलावाथयोमंदेपूकपातीतामलितीतगरीनेविपोउगतवेकलेकर्पाव
रेवीधेपतिवेदेथाकि मीटेमारें उरहेपहरखेधीसाताममहिहिरमादपहरीवकहदेपीनलो करताडेतामलितपस्वीनेमरीरमयीमाहरेवडवाईर्रईसानेइथयो परमम्हारोकदोनकीयोतिय
मरिपविउमकरोतोकम्हारीसेमबालपहरवोकरीतिरीविसीदीनीगरदीतिदेतो सरीरपवितेनापीतेदेवतालांविवानामराजानीप्रजातनिसोस्त्रम्हारिदुस्सरेतिद्वेमतोकनेवव
तापंतामलितपसीमासरीरविवेचाराजामनिदेवतापहीजाइतेमोरिहतमोवीलेदेषी श्रमदमाववकाईसानेदरायविश्रश्नादवेपडोगीकदीजोसामीरेवेश्राडोसरीरश्रमस्थातु
करश्रामीदेवतारमीदेधीरेवीपवकासोतिवरिवेवकनासमसर्वनीईसानेइदेवोतिमिमायमावथयो तिहांइडउभोविकाननसाईधाविमानतिहोरकररेलेवतिवैवाराजानीनोवे
कोपो तिवारदनिशिदिवदेवतासदुतालिनेतमस्वचाराजानीतानवैमरी श्रईइ तिसमस्ववईनिदेवतामवैत्रानीस्तुम्पायनवसुतामम्ममधरूपवकवितलासोलितिनमे
हाइतितमोकातोकालथम्दिकईविवालागा श्रसीश्रमकायानीपवियायागा वीतवीतोडे श्रस्हिमोठश्रपराधकमीतेगिसपवरुपरिवाडइसानेइहुबोतेदवतेतमहेसदीनसकिं
दिविवेद्काममिनीतीकरीवृत्तिमापरंमीरहवेदनश्रीतिसारितिसाशकतातमवदेवतागणकतावतिवेकदासहोप्रापनेलागा कहोतेतोतोदेवतातेविवणी कर्णतातहराजवासाकर २
वलीबुस्मारीहोईतमीकरु तिवारितेतपवनसांतलीईसानेइतेवउश्श्वयो तेहिमवेवतातो वडवाससरीरश्रुतहरे केनीपेसी बुतमीतिवईतेईसानेइमाथिकश्मागरोपमश्राप्तवानीम
रणविदेहिमीतितिमें तवेरमतिकायांनानकटतामलितालयमइपण्यीकीभावरंमहाजवाणसाडीसानेइथयो इतिगितपिलेनमतिवासिताश्चातमसुमकेवलयामीसीतेवयाश्रातक
इक्रीधेजानिपाशश्रि मैसंसारसमुद्रिखिरतोश्रनेकवेराकीधा परंकिहुकहरतांक श्याहैदेवपार्श्वनायतीनापणोमवसवजाननेनकहतांमारेकवेदाकासुदकरतांकिणश्रागवि
मकियकरवांनकीधी परेतेमर्वसावितिमारीनिपमनइई हिवशिवकदिजीपासपातिकीपतिप्पकदइतीसपामाटकीधी तिहांकरसंवम्हेइडपणेकरतायडितकेएम
दीवेहाकाधीतरविमपतेकहताभवमिमागाकरतामरणी किवकईतेम्पामालिपदकहताजे बुराणचवैपविविधबिकहतातयुवुववैउगेनाकान्वकृतवतानंनिसो पणी

९४२ ९

वाकरवा पोद्यंत। तउकेडभीदंवंनपिपानहीं। मरेतेवाक्तरसावांभीसुकुं। तिवारेएतलामइंडरवदीवा। एमाथा। १७। हिवैमारतेनोमपरांतकोनद्दीवरमउश्रमटोकोलेतेडकंतांभीक्रं
मायनच्छउकंमित्रपियंकरतउकंगोउकंमेउरिक्रताणउकंगुरुचेमकरू। उंडकसरनारिउवरावराउलनिश्चगारनी। णोउद्दकमकलमरणडिणपालहिवंगवे। १७। बारमा। हिवमार
रिवेहिडमाता। वेहिडसामीधणी। वेहिडवायवेहिडमित्रप्रियकरुसे। इरवसुमोकरणदारवेहिडगतिहिडपकादिगतिपरवो। श्रीपार्श्वनाथनिकट्यौनेमामाते। निहावकतरडिम
डिणइरगतिहाईयोनेहिडगतिरायिवानेवपाय। तिमश्रीपार्श्वनाथमिणरापिवामेउपामकडाणितेमजीश्रेहिडभति। वेहिडताणकरूतामरणोवेहिडगुरु। हिवगुरुतेसामाते। वीडोई
केगुरुरुरुकेतेशिष्यनेमतारायदसनावचनसीषावि उर्यडाथवामदिवि श्रापसर्वेवरुमाडांसचिणनेसर्ववसुडणावि श्रापनरे श्रिमकेकरइलागेमेदनेतारेसुद्धरूपकरेवे
कोइक्रुगुरुवोले। श्रनेसगुरुतारेषिसवेत्रनागघोडिनरूपीडिमापवीत्रपायमोएकमरणडावे। श्रनिजेकरुसेमोश्रवोलविमरणयोश्रनेसगुरुसेव्योमासतामुबधापे। निरिकार। णिम २
हरेसुगुरुपिणनेदिक्तनलिमार्येनोदिखामहार। वेमकल्याणनोकारकरवेहिड। हिवकेकेरवोनूं। डहसरनारिउकरुतांश्रेनेकडेडारवणोगमोगचिंतासंतापादिकतेहनोडेलरतिणे
करीजंमारीनूं। वराककेलारांकवूरा। उलकरतांवाकु। वेनूं। निश्रमादकरतांनितागीयामाहेश्रनागियामाहे। हिवकीणइश्रोउरकरतांतारेकमपाणनेहिडमोलतेहमेसुमवे।
हिविहिडिणहे। श्रीपार्श्वनाथपाउहिकरु:याणिश्रापणासेवकनिवेगरकरतांमलीपरे। १७। हिवपरवीवीनतीपार्श्वनाथरूपसांसलीइममतकरेछे। मेकिणहीतेत्रपगारमसीकी
मीउमेश्रनेकमनुमिसारवाटेपरवीतावरगाटतोबोलइ। एइंकिविकयनी। ...योयकिविपाषियमुहसय। किययेमंतमहंतकेविकिविमादियसिवपय। किविगडियरि
उवयकेविउसधवलियमूयनंमाश्रुविहीतेकेणपाससरणंगेवकाल। १४। व्याख्या। एकहतातेकिविक। केईएककयकीधामोयलोयकरूनीरोगलोकतेकिमडिकेरोगइकरीय
सहयाजतासर्वपापकानेडाविनमनीश्रामकेमीजतो। निएतारोनामनसुदेकयो। निवारेशिनीशेगथयापताववलीकेईएकतोथामाबेसुरवारासईकराडिणएदवाकीध २
कोइउवीकुंताश्रनितारीनामग्रहणकरताइडसुषीथया। एतावलीकेईएकनिर्नुकीपूर्वकतानिकेनाहरेनातेंमनिमंसिउहिवनथया। केईएकमहंतकरतासर्वहगवनेविष
इवसमकेईएकमनुष्यमाधोनेविमिवपएकहंतामोक्षमार्गएरवाकीधा। केईएकमनुष्यगेडवानेडिपयरीयारावर्गपरवाडयतरधाकीधा। केईएकमनुष्यडसेकरीकीघे
निधवलियकरतांधवलोमूयनक। इन्द्रीनजपरवाडसंचेतकीधानेहिवमाहरीवेलाप्रुकनेकिण। कारणोडेश्रीपार्श्वनाथवदीजयकरतांश्रवगिणइडेसरलीगनवठ
नसरीतारे। डिकेबानां। नियंनेतेनेवसलवैतीरिषकरे। एशथेनाकीधीनेपार्श्वनाथएदविनामसीयेसुंडवे। निरेहएकतरडिमसुहभंडातेपापणसरीषकविनेघ २

सौपायेविमकनरपीडामयेनिमश्रीपार्श्वनाथएरविनामश्लोवेयकेसर्वसंपदापामी। केशवकाडिमसहरूपाभसंयोगोमर्यविमडनसरीडाय। श्रनेनिर्विमडवे। यथा। एकतिश्लामेएकनमर
संवरुरुश्रीवसेनेहानेदेसइणिमांमिदीकरीलोकांरीवाषरुवारे। समयेरसराईकाते। हिवतेश्लच्यराश्रकावेवारहिवश्रयानकरूतीवाभरुवारीवरश्नैश्रावि। डेकामनेविवादेश्रस्यनरुविं
कलस्यो। सर्षेथावो। निवारेवांनममानेविमसरीएमांडेपरिणम्यो। नश्र्कावश्रुगोगनथईधरितीपडो। श्रचेतथयो। श्रकालाकनानीपतेनिमेश्रइपतुं। किएलडीकेमनुष्येधरेडइलेतरनीमात
नैश्चोमनकरे। डेताहरेतिउश्रमपथायो। नाहिरश्रुगोगनथकोपडो। डी। विवारेतेस्त्रीविणश्कारकरतीरोवतीरीकनी। मनर्डकिडाहामनुष्य। तिवारेतेनेनंदीदीकरपापसिद्धावी। सिएमनुष्यरोधे २
रेमीमेतेणिकोकरीनेकरयो। डेएवाहरोधुवकालगनथयो। श्रवहवेमेएहतेकोईभयाय। वेशुसर्वहाथमनीधरेगया। तिवारेनेकोकरीश्रवनेकांनपासिक्षावीरोदवानागी। विनापर
सनानागी। डेहांवंदनश्रुत्रआचहरणनुकालेनिरधारमूंकीरेहंसनेकिहांगयो। एहवेवारश्सेसरनामक्रोईकेचैवरश्रुकारीवानागी। इमतेरनेरोसाराविनलिकमीश्रमानसमयथयो। निव २ ×वरीश×
रेडिमसवैमाणमकवीकसेश्रायनिमकवीकसेमयबडमाशकहिवावागी। निवानेकोकरीश्रवबोलतोदेपी। श्यापणहवयसूश्राचीतेईएषितथईश्रुश्चनिकंधोमेववार्डगामभांरेश्रावी
सिवारेतिएवेश्रमारोमांडोतेहनोश्रुत्रदीथो। कहिवानागाडेएतारोउश्किमडीयो। किसीतेउमवारकीधे। निवारेतेकोकरीकहिवानागी। नाईविधाजतोमिधवानेरश्चनमाकाईवमो
नेमोक्षाएनरहीमत्रतेरयंवरूमीमूटीतणी। सोमाहेयवरकानथी। परंएहनोनामरहमरपदवीकहीमोटेमारसाचीलाशिरुदनकीधे। डिवारेरुदनकरतांसूर्यऊगो। निवारेएवासकथिए
कवीकसोथयो। एहश्रीनागपमावलेनिणिमेजिएलालककहस्यो। निवारेभेराडवेयकहिवालागा। डेमर्णरिमंश्रमांहिमारसूतहंसरश्रीहिडवेडरुरमराड। सिश्रकरानसंयोगमेव
रीडएडेमंधनागऊलमांहेसर्पथेनेदनोविषनकालरूयडामकमोनरहे। सनेतेहंसएरवोनाहरेश्रुश्चनोइडि। नामतेजेनागरूनरेवश्चानेएसावेमावरीश्रवनिर्विषथयो। एरवा
श्रहनानसंयोगाणापन्नावे। तेडिपश्रहरानसंयोगे। तेहनोविषकलरयो। श्रमश्रीपार्श्वनामएरदेश्रहरामसंडोगेनामनीधेरोगसोगउपद्रवविजयकाय। श्रनेनवेनिधिश्रारोग्य
सोमागमंपदो। एहवोनाममेश्रसावदे। पतावार्थ। गाथा। वीरोवहिरोवधाएगा। १४। २१। हिवरवजीशिष्यकहिडेतेपार्श्वनाथगवंतेकासेवउपगारकीधोछे। डिणकयरिउकनेपिएउ ×३४×
पगारकरेछे। एहविशनियुरुश्रीपार्श्वनाथमगवतनेविषमिरीहपणोदेषाडतोबोले। पच्चुवयारमिरीहस्मा... निष्प्रयत्तउपाडहिडिणपासपरोवयारकरणिकपरा
यण। ससमित्तसमचिन्नवित्तसमनिस्यसममण। नाश्रवीरिश्रश्नुयो। विभेपासनिरंजण। १४। २२। व्याख्या। पच्चुवयारकरतांमाडीडेउपगारनोकामिवीतेहनेविषेनिरीहतेनि
मडेएहनेमइउपगारकीधो। श्रनेपश्रिणमुडमेउपगारकरिसे। माहरेकामश्राविसे। एहवोउम्हेमांश्रोमद्दे। एरस्यरेनाथदेमामी। निष्पन्नपश्चेयएकस्युं। तेम्हारायोडनका
यतिकेसर्वीपनाडइ॥
×३१×
10

[illegible]

१०

[illegible]

११

तिहनीवालिदगमायो। पार्श्वनाथस्वामीश्रीधीं। तिणिनेविद्यायपणिडवीथनेउमहआगलिश्रीपार्श्वनाथकहूंतउहनेतेजिवीनीकिंउपाजिवडइक्षांपनाव। रथा। हिवेतेइंद्रनाथा
थेतिवानोकहै। यहहस्तुविडीजवितिसेसुकेविमन्नहिदीपहे। कृपासिविउवयारकसहंउहनाहमयदह। सूत्रियकिमकृपागुणेजिणेलिपसीयह। किंअन्नएतं
वदेवमानिअवहीरह। २६ व्याख्या। यहकहताहिविअस्तुविडोगो। विसेसकेवलअनेरोपिणहोगयताविसेषकुविकल्पकांइमानिमइपीणहकदीनमनुष्यनेहोगपना
विसेषदेबीजपगारकहिसंइहकहतांनेतमसमय। कंसारालाइति। तेकिम। सुखलिसपहकूकर्मउनथी। तारीकमानिकासुउपगारकहूं। एहवोमनमांहेमालिहो। एम
वातेकीइतोख्रियकां। लिकेइक्किचनिश्चयसंघातेमाहरीकल्याण। इसितेनोउपसमहिणेकरीहेज्ञानपुण्यपमीयहकहतेहेउसमतंवतकइसो। वलीतेहिंडोगपनापणे २
पिणउदेवसेअसमपडीमवकनेविवाहिस्यो। किंअन्नेणकहतांअनेरेडोग्यतागणे। किसंतेववहवकहतांहेदेवउन्हेउसमन्नधाम्पहितेहिडोगपताविहीवजोईनेमुझनेम
तअवहीलो। मतिअवगणिइसोएसा २६ हिवमिताहरीसुकिहोथीथै। तेहनोफलउकंपइइमरइंश्रनावलोएहवोभावपगटनथी। तेहउहपदणनकोइहहिरलकीण
काणोकिंकुणइहउडरिक्तिउनिरूमनववहडककस्तंभसुयमगुणममह्रोमिमसेणेदर्शेविजयनयैमथेडंस्रुरिकउवसेएकिंउपवरफलहस २७ उहकहंमानातुरीपन्नगपार्श्वना
जचोडहतांनह्रत्यविहलक० मिष्फनदेजिनजाणपरंकिरूकहताकांसूकहूंपुण्यक० वलीफलदुरिएनीचइतिकहतानिश्चयसंघातेमननंकहतांमनीरहिसनिसन्नलोइ
कहकस्तांइरंजनीय। महरीमनरंजनतावीहिलो। वलीउस्तुयमलकहतांउस्तुकममफलप्रतिअनेनलोपत। एमउकहतांपिणकारणेइंमनमाहेइममानूंडंमिमि
णकहू निमेषमात्रमाहेजीवमउघामीजीमीबीजेतेनलेमाहे। इयकहतांथोमधेज्ञानसुधोदर्शनसुधोचारित्रकेवलज्ञानसहूकणडोजानेतोमलो। एहवीमाहरेमनमां २
हेजोउपतापुरसहकहतांएकमाणउपसमगहेतुस्कियवमेपाकहतांचननिवसे। किंकहं। कंखुंकंवरथाचह। मपिउनपायेइंडिमफलजाणपछिउवरहरुनाफलनारक्तसे
पायैअनेकोइएकपुरुषांतरमनुष्यअकालेपिणमनमाहेथीतवइजेआजीफलपायेतेनजाहवेकिमथाईडितेनेहनेमननेअतिशापक्षुस्वकालेपिणतेवरपाव
मपिउनपावइहं। तिमहूंपिणमनमाहेचिंतधूंढंजेमेतुंरीस्नवनाकीवीसेहनोफलआजीडपांगेंतेनउकालेपामीहीं। निश्चयसंपरंकंखुंउस्तातनतनूकूइमडाएडंजेकिव २
रहईफलकंप्पइ। एहवोफलवेरेविषइस्मधीरिमपरंताहरीसेवानिष्फलनहींहोथेएसाव। तिणिकारणिएकहउपुरुषनेदीननिसनदेषीहिवफलदेवालोजसमकरे २
हिनम्हमेंफलदियोईरुकोईजइपणिआभिप्राय। २७ हिववलीआपनेविषेदीनपणोप्रगटतोबोलहै। विकृयणसामियपाननाएमंसप्पपयासिउ। किंजाप्रसंकमिय २

हवमरिसनपुण्यंउवऊडंविउं। पत्थुबहिणरूगिउदसमोहिदरिकमदयासउ। डेचवगम्रसिउंजंजिनवरकिंहरेसुयासउ। २८ व्याख्या। हेत्रिभुवनस्वामीहेपार्श्व २
थमेस्यपकहतांआपणपौउम्हआगलिप्रकास्यो। आपणोदुःषआपणांवीतगसहुकह्या। तिणिकारणिकिंचवकहतांकरोहंकंजिणकारणिनियहूवमसिसकहतांआ
पणारूपसारीषो। तेकिम। डेरवोजगत्रमाहेनेसहजीकवंदनीकछे। तेहवोपुरुषनेपिणकहे। एमनमुंणमज्ञातपिउकहतांनजाणंयणोवाजी। हिवउकनेमांमी
वाजोदेववमाहूंतेकहइ। अप्तुनकहअनेरउबीडोकोनहीं। जिणदेजिनदेवश्रीपार्श्वनाथजगत्रनेविषेइउहममोकिकहतांतोसारीषो। जिणजगत्रमांहिंसारीष २
वीडयसादिवकोनहीं। तउतीयकीअधिकजिणकजमरएहस्य। पिणनेकहवोछे। वाक्षिएणकहनपरमोकार्यकरिवो। अनेदयातेहनउउस्याश्रयकहतांघरउनपत्रनेप
ह्योथकोजउपुरुषनेपूअवगणिसिअवहीलसितउअरहपहवोषेदकारीयोवचनहीं। तिऐंक्षिमञ्जइसरयासेभकहतांएतामनिष्फलमनोरथ। जिणिएजोनेपुरुषमेआमउ
तोपुरुषनेआधारकोनहीं। परहस्य। २७ हिवस्तुश्रीतरनेविषितेपव्रावतीनेक्तिशायदीवालेहनीबक्कव्यतासहितआपणपोहवदेषाडतोबोले। जेउहरूविसकिणवि
थेयपायएवेलवियो। उविज्ञाणउजिणपाससुम्हिहउअंगीकरियो। इयमहइज्ञिणउजेनहोइसाउरूक्षावए। रकतहनियकिज्जियजोअवहीलिए। २९ व्याख्या
हींकहूजोउहकहूंकएक० नाहकेरूपकिणचिकहतांकिणहीकेपेयपाइएअवेतपायइवेलहूंससारीषेअषवाअंतरयामीश्रयस्साहि। केपवावतीथेकेवलवियो
कहतांविक्रम्यो। उविज्ञाणउकहतांनेपिणरूंमरुमहजाणंदे। जिनदेवश्रीपार्श्वनाथप्रभुउम्हिमुजनेअंगीकरियउकहतांअंगीकारकीधउ। काइजाणकोइसमशेतपा
यरूधरणेइपदमावतीराविसतोजवपुरुषनेदरसाईविषावइ। तउपिणक्षेइ [illegible] नाथतेहपनाबीपुरुषनेअंगीकारकीधो। एहवोदिनरातिमाहे
रेहृदयमांहिमाहरीईकह्यानरहइछे। एसाव। अनेइयकहतांपद्दवियकेनेपिणमाहराइक्षियकहतांमनावंहितंतेनहींइकहतांकिंकेमथीहवमा। वांछितप्राइ
कनानथी। साकहतांजिकांनीतेहनीसावणकहतांऊरूनिश्चपदाथमालाघवणपणउलेइ। णिवातूंशंहिजजोकमाहेलजमो। हीसिसएलाव। तिणिकारणिराषताभि
यकिस्लकहतांआपणीकीर्तिश्रवहीलणामकरि। तेकिम। लोकमांहिताहरीकीर्तिछेजेपार्श्वनाथनगनेनपरतांनोसरणहारछे। अमवकियांआधारछे। अनइ
पुरुषनेअवहीलिसमाहरामनोवांछितनथीप्रवे। तोइणिवातिंताहरीक्ककीर्तिजास्ये। तिणिकारणिनेआपणीकीर्तिचिंतवि। अनिपुरुषनेपालि। आपणवसेवक
जोणीनिवाज। इणिवातेंतेहदिजरूरूदीसिस्यएलाव। २७। हिवसर्ववीनतीकरीसंपूर्णकरतोपहवउंनावबोलि। एवमहारिसरून्नदेवइयन्नवणमहसव॥ 12

॥ अपलियगुणगहणं मम मुणिहणं अणमिहणं ॥ पमइ पभीय सुयासुनारह वंसणायपुरछिय ॥ इय मुणिवर सिरि अभयदेव विन्नवेण निंदिय ॥ ३१ ॥ व्याख्या ॥ एवं कर
पडिक्कमसारियकरसां मारही यात्रा ॥ हेदेव हे श्री पार्श्वनाथ [illegible] करता पडिकूमा रहरो ॥ नवण [illegible] सब करतां सात्रम हो अवाडे अणलियगुणकर अवा डिके गुणनेहनो
यहणकी धौडम करतां मां हारो ॥ कांई इणि स्तोत्र मांहिं मे अक्षरा या [illegible] ता गुणवो त्या ॥ डिमभंग ववामवारलो निरर्थक ॥ श्रीछंदी एनिरर्थक ॥ बेश्या पात्र निर० ॥ मडाकल्या
णी करही थ्ये ते निर० ॥ अब ता लवचे हिडमकरी ॥ ए ते निरर्थक ॥ सो किते वडिम करही ए ते निर० ॥ हो गीतेक हिये गयते निर० ॥ आचिडइ वणी निजआ ई कहिये ते निर
र्थक ॥ ति मडे मे पूर्वे वषाण्या ताहरा गुण ने एहवा निरर्थक नथी ॥ अणलिय गुण ते ॥ वता गुण वहां ॥ नहीं भलं गुणनो मेंह यहणकी धोधेइड मांहरी आज्ञा से इज
अमसेमावज्ञा लिदोष ॥ पमावणलिडे में ताहरा गुण करया ॥ तिके मुणिडण करसो मुनीश्वरने अण मिहडुं करतां ॥ अनिंदि ते ॥ निणि कारणि डेम इं ताहरा गुण माया
ते सर्व मुनीश्वराने निंदनथी ॥ ते तेआ ताहरा गुण मुनीश्वर गावे ॥ एताव ॥ तिणि कारणि मे पिण दीनपणो माषी ताहरा गुण वोल्या ॥ कांई अनेरा राजा ना गुण देस
तणा गुण स्त्रीतणा गुण रसवती तणा गुण मुनीश्वर निंदे न कहिया ॥ एताव ॥ तिणि कारणि मिं ताहरा गुण गाया ॥ तिणि कारणि एम करतां एह वहतां हेरे सेवक ऋषभ
मांहरे विषयंप सीय पक्करसां ॥ अप्रसन्न थाय ॥ श्री पार्श्वनाथ थंभणयपुरछिय करतां थंभणपुर नगर ने विषइ स्थित करतां रह्या थका ॥ इम मुनिवर श्री अभयदे
वसूरि ईषीन विनवामी ॥ हमेनो करणहार खरतरगच्छ शृंगार सकल सूरि सिरदार ॥ अणिंदिय करतां त्रिणे त्रिभुवनने ॥ लोके करी जी धको ॥ एम श्री पार्श्वनाथ भगवंत ने स्त
वे ॥ ए ३० ॥ काव्ये करी श्री पार्श्वनाथ भगवंत नी स्तवना श्री अभयदेवसूरि कीधी ॥ आपणी मतिनइ अनुसारे वषाणी ॥ ते पंडित मनुष्ये म्हो ऊपरि कृपा करी सोधिवी ॥ एरहस्य ॥ ३१
एनले त्रीस काव्य वषाण्यां ॥ अनै बीजा काव्य गुरुगम्य छै तीने हारी आम्नाय जाणी ॥ वाचिडयो ॥ तं जावइ ॥ तिणि ने जिमइं नथी लिष्या ॥ ए श्री जयतिहुयण स्तोत्र सवि
तणी सुचि पवित्र थई ॥ मम हृदरा वीडि के नब्ध डीवंसा [illegible] रस वारर अनहम ध्या [illegible] किकास गुणि स्ये वली तेहनो एरहस्य गर्भित वाचा बोधनणि स्यइ वीतारस्यइ
मानलिस्ये ॥ विके स्तुति [illegible] इहलोक छडी ॥ परलोक देव गति मोक्ष [illegible] नास्ये ॥ तिणकारणि [illegible] बोध ने सार जाणी ॥ भविक प्राणी
ए स्तोत्र ने विषय [illegible] करिवो ॥ इति श्री जिनकुशलसूरि संताने ॥ वाचनाचार्य श्री क्षेमकीर्ति गणि [illegible] श्री मल्लिकनककलश महोपाध्याय
[illegible] शिष्य वा० श्री लक्ष्मीविजय गणि शिष्य वाचनाचार्य रत्नसार गणि शिष्य [illegible] गणि [illegible] पं० श्रीसारमुनि

गा ×स्ता×